ACCENT JOURNAL OF ECONOMICS ECOLOGY & ENGINEERING
Peer Reviewed and Refereed Journal, ISSN NO. 2456-1037
Available Online: www.ajeee.co.in/index.php/AJEEE

मिथिला (मधुबनी) चित्रों में कोहबर में प्रतीक चिन्हों का महत्व

शोधार्थी – अलका झा
ललित कला विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, म.प्र
पर्यवक्षक – डॉ. प्रदीप कुमार निवोरिया
एसोसिएट प्रोफेसर, ललित कला विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, म.प्र

मिथिला चित्रकला महिलाओं द्वारा हस्तांतरित होकर मिथिला के लोकाचार रूप में वर्तमान समय में भी विधमान है। यह कला बिहार–नेपाल सीमा में 15 जनवरी 1934 में आये भूकंप से प्रकाश में आई। भूकंप की तबाही का जायज़ा लेने ब्रिटिश अधिकारी विलियम जी आर्चर को भेजा गया। टूटी हुई दीवारों पर इन चित्रों को देखकर वे बड़े ही आश्चर्य चकित हुए और उन्होंने इन चित्रों की तुलना, पिकासो जैसे कलाकारों से की। 1949 में उन्होंने आर्ट जनरल, मार्ग में इस चित्रकला पर एक लेख लिखा। तब यह कला दुनिया के सामने आई।

1956 में पुपुल जयकर जब ऑल इंडिया हैंडीक्राफ़्ट बोर्ड की चेयरमेन बनी, तब मिथिला चित्रकला की उन्नति के लिए आर्चर से संपर्क किया, पर कोई विशेष सफलता नहीं मिली। 1966 में बिहार में आये विषण अकाल के बाद, मिथिला चित्रकला पर काम करने के लिए भास्कर कुलकर्णी को भेजा गया, उनके निरंतर प्रयास से यह कला विश्व में प्रसिद्ध हो गई।

यह कला के अनेक स्वरुप हैं, जैसे भित्ति चित्र, गोदना चित्र, तांत्रिक चित्र, कोहबर चित्र, अरिपन आदि।

कोहबर चित्र

नव विवाहित युगल जोड़ों के कमरे में कोहबर चित्र बनाए जाते हैं। कमरे की हर दिशा में ये चित्र बनाये जाते हैं, जिसमें प्रतीक चिन्हों और उनके निरूपण की दिशाओं के मध्य कुछ संबंध दिखाई देता है। कोहबर चित्रों में सांकेतिक प्रतीकों के पीछे कुछ सिद्धांत हैं। कोहबर में बनने वाले चित्रों के नियम, शर्त और प्रतीक चिन्हों के लिए निर्धारित स्थान है। ब्राह्मण और कायस्थ परिवार में अलग–अलग तरह से कोहबर बनाये जाते हैं। ब्राह्मण परिवार में बनाया जाने वाला कोहबर रंगीन बनता है (चित्र–स.–1) तथा कायस्थ परिवार में बनने वाला कोहबर लाल रंग से काछनी का प्रयोग कर बनाया जाता है (चित्र–स.–2)।

कोहबर में कमल और पुरैन का चित्रण–

मिथिला में कमल का पुष्प तथा पुरैन (कमल का पत्ता) कोहबर में अभिन्न अंग हैं। हिंदू धर्म में यह एक पवित्र पुष्प है, वेदों और पूरणों में भी इसका वर्णन मिलता है। यह पुष्प माँ लक्ष्मी माँ सरस्वती का आसान माना गया है।

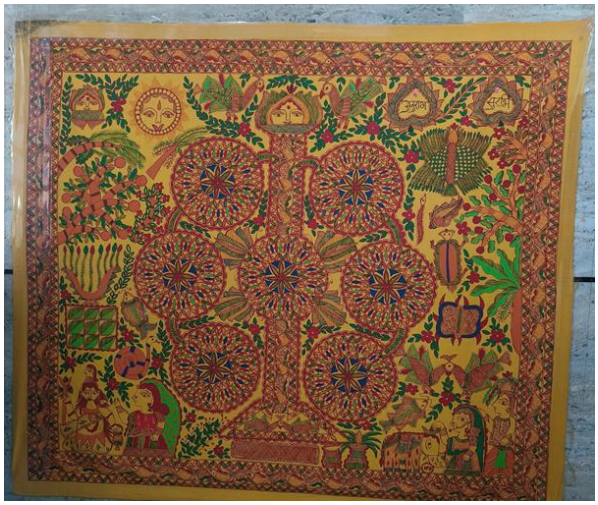

चित्र संख्या –1 (ब्राह्मण परिवार द्वारा बनाया गया कोहबर)

कमल की उत्पत्ति कीचड़ व जल में होती है पर भी यह हमें स्वच्छ, पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसी कारण कमल का खिलना अत्यंत शुभकारी और मंगलकारी माना जाता है। कोहबर घर में कमल का पुष्प, कमल की नाल और कमल का पत्ता गृहस्थ आश्रम के कई गूढ़ अर्थों से परिचय करवाता है।

कोहबर में मछली का चित्रण –

मिथिला में कोहबर चित्रण में मछली का चित्रण किया जाता है। मछली एक प्रतीक है, जो शुभ और प्रफुल्लता को दर्शाती है। इसके अलावा मछली को जीवन की समृद्धि, संपन्नता, और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

युगल मछली को कोहबर में चित्रित किया जाता है। ये युगल मछली (जोड़ा मछली) धन, समृद्धि और ऐस्वर्य की बहुलता का प्रतीक माना जाता है। अगर युगल मछली आपसी प्रेम, सद्भावना, सुख, खुशी और लगाव का प्रतीक है। भारतीय योग परंपरा के अनुसार जोड़ा मछली, सूर्य और चंद्रमा का भी प्रतीक है जो की मानव को जीवन ऊर्जा देती है।

चित्र संख्या– 2 (कायस्थ परिवार द्वारा बनाया गया कोहबर)

मिथिला कोहबर में कछुआ का चित्रण–

मिथिला कोहबर में मछली के बाद कछुआ को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कछुआ का चित्रण गृहस्थ जीवन से जुडी ज़िम्मेदारी निभाने में तथा देवी–देवताओं व नव के आशीर्वाद की कामना के लिए में भी चित्रित जाता है। कछुआ नव दंपत्ति की लंबी आयु का प्रतीक है। कहा जाता है कि कछुआ पृथ्वी पर सबसे लंबी आयु वाला जीव होता है,अतरू नव वर–वधू भी लंबी आयु प्राप्त कर संसार की विभिन्न सुखों का भोग कर सकें, इस कामना के साथ इसे कोहबर में अंकित किया जाता है। कछुआ की प्रजनन शक्ति भी अधिक होती है,ये एक बार में तीस अंडे देती है।

मिथिला कोहबर में बाँस का चित्रण–

मिथिला कोहबर घर में बाँस के चित्रण का भी विशेष महत्व है। बाँस का पेड़

वर–वधू के वंश की प्रत्येक परिस्थिति में वंश वृद्धि, दीर्ध आयु और मंगल कामना का प्रतीक है।

बाँस का संस्कृत नाम वंश है। वंश मतलब कुल होता है। पृथ्वी में बाँस का पौधा प्रत्येक परिस्थितियों में भी बड़ी तेज़ी से बढ़ता है। बाँस का पौधा किट मुक्त होता है, तथा सूखा व अधिक वर्षा का प्रभाव भी बहुत ही कम पड़ता है। सूखा पड़ने जैसी हालत में भी इसमें फूल खिल जाते हैं। बाँस का पौधा मिथिला कोहबर में नव–दंपत्ति के जीवन में विपरीत परिस्थितियों ने भी आपस में प्रेम और मधुरता बनाये रखने की प्रेरणा देता है।

मिथिला कोहबर में नवग्रह का चित्रण–

नव ग्रह, सूर्य, चंद्रमा साक्षी के रूप में और इनसे आशीर्वाद लेने के लिए बायें जाते हैं।

मिथिला कोहबर में नैना–जोगिन का चित्रण –प्राचीन समय में मिथिला क्षेत्र में बौध्य धर्म का प्रभाव के कारण गृहस्थ जीवनकों त्याग कर बौध्य धर्म को अपना लिया था, कुछ ने अजीवन ब्रह्मचारी हो गये थे। मिथिला में ब्रह्मचारी या गृहस्थ जीवन को छोड़ना भी बुरी नज़र का प्रभाव और जादू–टोना का होना मानते हैं। नव वर वधू का आपस में सबंध अच्छा रहे, उनका आपस का आकर्षण कम ना हो, उनका गृहस्थ जीवन सुखमय हो ,वे बुरी नज़र से दूर रहें। किसी जादू–टोने को उनके गृहस्थ जीवन में कोई प्रभाव ना हो, इस कामना के साथ कोहबर घर में चारों कोनों में नैना–जोगिन को चित्रित किया जाता है। चारों कोनों में नैना–जोगिन को चित्रित कर चारों दिशाओं से बाँधा जाता है।

मिथिला कोहबर से जुड अन्य भित्ति चित्र –

मिथिला में कोहबर घर के बाहर भी (बरामदे) पर दही, कटहल, केला,मछली आदि ले जाते हुए भरिया (एक स्थान से दूसरे स्थान तक समान ढोने वाला व्यक्ति–कहार) का भी चित्रण किया जाता है। भरिया के चित्र में व्यक्ति के कंधे पर, लकड़ी पर दोनों तरफ़, वधू के घर से आने वाले खाद्य पदार्थ का चित्रण होता है। भरिया के चित्र के माध्यम से वर–वधू के जीवन में परस्पर सामंजस्य बना कर चलने के लिए प्रेरित करता है। भरिया के चित्र में दही का भरिया, केला का भरिया, कटहल का भरिया, माछ (मछली) का भरिया आदि को चित्रित किया जाता है। मिथिला में कोहबर घर के बाहर बने चित्र यहाँ की लोक कला की परंपरा है। विशेष कर वर के बैठने वाले स्थान की दीवार पर ये चित्र बनाये जाते हैं, जिसका उद्देश यह होता है कि वर (पुरुष) अपनी पत्नी (वधु) का पालन–पोषण अपना कर्तव्य समझ कर, अपनी जीवन यात्रा को आगे चलाये और उनका दांपत्य जीवन के लक्ष्य को पूर्ण करें।

निष्कर्ष –

यह प्राचीन लोक कला है, जो कि मिथिला के घरों की दीवारों और भूमि पर हरेक पूजा पर्वों पर निरूपित किए जाते हैं। भित्ति चित्रों के रूप में कोहबर

को पारंपरिक रूपांकनों व संपूर्ण नियम दृ निष्ठा के साथ बनाये जाते हैं। पहले तो कोहबर कमरे की प्रत्येक दीवार पर, निश्चित स्थान पर बनाये जाते थे, परंतु वर्तमान समय में इसका स्वरूप कपड़े में, लघु रूप में आ गया है। इस कला की यात्रा जारी है सार्वजनिक स्थानों और शिल्प बेचने वाली दुकानों पर देखा जा सकता। देवी–देवता, कोहबर चित्र में विभिन्न प्रतीकों के साथ के आशीर्वाद के रूप मौजूद रहते हैं। इन प्रतीक चिन्हों का विशेष अर्थ व महत्व हैं, जो कि अपने निश्चित स्थान पर बड़े नियम निष्ठा के साथ बनाये जाते हैं।

संदर्भ

1. झा राकेश कुमार–मिथिला चित्रकला का सिद्धांत–मिथिला स्कूल ऑफ़ आर्ट, मधुबनी– भाग–1–2023,
2. ठाकुर उपेन्द्र, मधुबनी पेंटिंग, दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982
3. ठाकुर उपेन्द्र, हिस्ट्री ऑफ़ मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट, दरभंगा, 1956
4. डॉ. रखी कुमारी, मिथिला की भित्तिय चित्रण परंपरा, वर्ष 2021, आदित्य पब्लिकेशन
5. आर्चर, डब्ल्यू. जी.– मैथिल पेंटिंग, मार्ग, भाग–2 संख्या–3 मुंबई
6. झा, लक्ष्मीनाथ–मिथिला की संस्कृति चित्रकला, पटना, 1962
7. अवधेश अमन, मिथिला की लोकचित्रकला सफलताएँ–असफलताएँ, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली–1992
8. आलेखन–समाचार पत्र, सुमन सिंह जनवरी 22/2021
9. झा, कृष्ण कुमार–मिथिला का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पटना, 2004
10. झा, परमेश्वर – मिथिला तत्व विमर्श, स. मैथिली अकादमी, पटना, 1977
11. चांदना मिश्रा, मिथिला की मधुबनी लोककला शैली दृलघु शोध।